* हस्तकलाएँ *

- वह कलाएं जिनके निर्माण का मुख्य उद्देश्य व्यावसायिक हो हस्तकलाएं कहलाती है।
- यह एक कुटीर उद्योग है।

- हस्तकला की वस्तुओं के विपणन एवं संवर्धन की जिम्मेदारी 'राजसिको' की है।

- वर्ष 2004 में राजसिको द्वारा M.I रोड़ जयपुर पर "राजस्थली शोरूम" की स्थापना की गई।
- यह अपनी उत्पादित वस्तुओं को "राजस्थली नामक ब्रांड" के नाम से बेचता है।

- हस्तकला के विदेशी व्यापार को बढ़ाने के लिए राजस्थान में 3 EPIP (Export Promotion Industrial Park) "निर्यात संवर्धन औद्योगिक पार्क" संचालित है।
  1. सीतापुरा – जयपुर (हीरे जवाहरात से संबंधित)
  2. बोरानाडा – जोधपुर
  3. नीमराणा – अलवर (नवीनतम)

- वर्तमान समय में राजस्थान में 36 जिला उद्योग केन्द्र व 8 उपकेन्द्र तथा 3 आदिवासी दरिबुनाई केन्द्र है।
  1. आदिवासी दरिबुनाई केन्द्र – चित्तौड़
  2. धारियावाद – प्रतापगढ़
  3. उमरगाँव – बूंदी

- राजस्थान मे UNDP (संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम) व खादी ग्रामोद्योग के प्रयासों से जयपुर में "राष्ट्रीय हस्तनिर्मित कागज संस्थान" की स्थापना की गई। जिसे वर्तमान में "कुमारप्पा" राष्ट्रीय हस्तनिर्मित संस्थान" कहा जाता है।

- राज्य की प्रथम औद्योगिक नीति - भैरोसिंह शेखावत (1978) के समय बनाई गई।

- 1991 की औद्योगिक नीति में हस्तकला को संरक्षण प्रदान किया गया। 1998 की औद्योगिक नीति में जुड़ी "क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने का प्रयास किया गया।

- राजस्थान में विदेशी मुद्रा अर्जन में सबसे बड़ा योगदान हस्तकलाओं
  * हस्तकला का सबसे बड़ा केन्द्र - जयपुर जोधपुर
  * हीरे जवाहरात का सबसे बड़ा केन्द्र - जयपुर है। जिसका सर्वाधिक व्यापार "जयपुर के जौहरी बाजार के माणकचौक" में होता है।

- हस्तकला से जुड़े सर्वाधिक कार्य "जवाहर कला केन्द्र -जयपुर" में होते हैं।
  निर्माण - 1991-1992 वास्तुकार - चार्ल्स कोरिया
  उद्घाटन - तात्कालिक राष्ट्रपति - शंकरदयाल शर्मा ने किया।

- वर्तमान समय में राजस्थान में राष्ट्रीय स्तर के अनुरूप ही 1996 से हस्तकला के क्षेत्र में "उत्कृष्ट कार्य" करने वाले को 50,000 रुपये व 'दक्षता प्रमाण पत्र' प्राप्त करने वाले को 5000 रुपये की पुरस्कार राशि दी जाती है।

1. ब्लू पॉटरी → जयपुर

- वे चीनी मिट्टी या सिरेमिक मिट्टी के बर्तन "पॉटरी" कहलाते हैं

- ब्लू पॉटरी में मुख्यत: नीले व हरे रंगों का प्रयोग किया जाता है।

- यह मूलत: 'पर्शिया ईरान' की कला है जो अकबर के समय भारत (दिल्ली) लाई गई।

- मानसिंह के समय इस कला को 'जयपुर' लाया गया।
  ब्लैक पॉटरी - Kota व सवाई माधोपुर।

राज. चित्रकला का प्रथम पद्म श्री – रामगोपाल विजयवर्गीय (1984)
राज. हस्तकला का प्रथम पद्म श्री – कृपालसिंह शेखावत (सीकर 1974)

- लेकिन सर्वाधिक विकास रामसिंह द्वितीय के समय हुआ क्योंकि इन्होने चूड़ामन व कालु कुम्हार को यह कला सीखने दिल्ली भेजा

- ब्लू पॉटरी में नीले व हरे रंगो के स्थान पर 25 विभिन्न रंगो का प्रयोग करने का श्रेय "कृपाल सिंह शेखावत" (सीकर) को दिया जाता है इसलिए इन्हे 1974 में "पद्म श्री" पुरस्कार दिया गया व 1980 में "कलाविद" की उपाधि से सम्मानित किया गया।

2. साड़ी →

- राजस्थानी परिधानो में 'साड़ी व सलवार' की प्रमुखता है। जिसमे लाल रंग का अधिक प्रयोग हुआ है।

- चोल, निचोल, पट्ट, दुकुल, चीर, पटोरी, चौरसो, चुनरी आदि साड़ियो के विभिन्न प्रकार है।

- जोबनेर जयपुर की – फूल पत्ती वाली साड़ियाँ
- सवाई माधोपुर में पक्के काले रंग से बनी – सूंठ की साड़ियाँ
- नाथद्वारा की – स्प्रे प्रिंट व चूवा चंदन की साड़ियाँ
- कोटखुर्द कोटा की – जेम्स की साड़ियाँ
- कैथून कोटा – डोरिया / मसुरिया साड़िया सम्पूर्ण राजस्थान में प्रसिद्ध है।

* डोरिया / मसुरिया साड़ियाँ →

मुख्य केन्द्र – "कैथून" (कोटा) – चन्द्रलोई नदी के किनारे,
अन्य केन्द्र – रोटेदा – बूंदी, मांगरोल – बारां

- यह मूलत: मैसूर की कला है जिसे 1761 में कोटा के प्रधानमंत्री झालाजालिम सिंह द्वारा लाया गया। (गुमान सिंह)

- इसका सबसे मुख्य कलाकार "महमूद मसुरिया" था।

* मीनाकारी - जयपुर - कुदरतसिंह - पद्मश्री पुरस्कार
मीने (कांच के पाउडर) को उच्च ताप पर पिघलाकर आभूषणों पर चित्रकारी करना।

* वर्ष 2008 (2007) में वसुंधरा राजे सिंधिया ने इस साड़ी को पहनकर मॉडलिंग का कार्य किया इसलिए इन्हे "वुमेन टूगेदर अवार्ड" से सम्मानित किया गया।

- साड़ियों पर विभिन्न प्रकार की रंगाई, छपाई व बंधेज का काम होता है।

3 बंधेज →
कपड़ों को धागों या डोरियों की सहायता से बांधकर विभिन्न रंगों में रंगना "बंधेज" कहलाता है
मुख्य केन्द्र - जोधपुर, जयपुर
हाड़ौती प्रदेश में - टाई एण्ड टाई का बंधेज प्रसिद्ध है।

* रंगाई / छपाई के विभिन्न केन्द्र :→

1. अजरक प्रिंट (बाड़मेर) :→ इसमे लाल व नीले रंगों का प्रयोग होता है। इसलिए इसे "Red and blue" Print भी कहा जाता है।

2. मलीर प्रिंट (बाड़मेर) → इसमे कत्थई व काला रंग का प्रयोग होता है इसलिए इसे "Coffeed and black" Print कहा जाता है।

3. दाबू प्रिंट / अजय प्रिंट - अकोला (चित्तौड़)

इसमे लाल + काला + हरा रंग प्रयुक्त होता है।

4. बगरू प्रिंट - जयपुर - लाल व काले रंग का प्रयोग।
प्राकृतिक रंग - बेलबूटों व पशु-पक्षियों के चित्र।

5. सांगानेरी प्रिंट - सांगानेर (जयपुर) Imp

* इसमे प्राकृतिक रंगो (Natural Colour) का प्रयोग होता है।
मुन्नालाल गोयल ने इस कला को आगे बढ़ाया।

* वार्तिका प्रिंट – मेड़ता नागौर
  – इसमें मोम से चित्रण किया जाता है।
* मेण छपाई – सवाई माधोपुर
  – इसमे भी मोम से चित्रण किया गया है।

4. लहँगा → (जयपुर)

– यह एक प्रकार की ओढ़नी (पोशाक) है। जिसे सजाने के लिए मोटे गोटे का प्रयोग किया जाता है।

– लप्पा, लप्पी, किरण, बांकडी*, मुकेश, धाकला, बिजला, चंपाकली, धनक, कशीदा आदि गोटे के प्रकार है।

– लप्पा गोटा 3 प्रकार का होता है –
1. नोदानी 2. चोदानी 3. सतदानी।

– गोटे का फूल – बीजिया कहलाता है।

– प्रसिद्ध गोटा खंडेला (सीकर) व भिनाई (अजमेर) का।

– राजस्थान में 80 कली का लहंगा बहुत ही लोकप्रिय है।

Note → कपड़े पर विभिन्न प्रकार चमकीले तारों से जड़ाई करना "गोटा" कहलाता है।

5 पोमचा – जयपुर, जोधपुर

– पोमचे का संबंध "पद्म / कमल" से है अर्थात् कमल के फूल - पत्ती वाली ओढ़नी जो सामान्यतः "प्रसूता" महिला को ओढ़ायी जाती है "पोमचा" कहलाती है।

– "पुत्र" जन्म पर – पीले रंग का "पुत्री" के जन्म पर – गुलाबी रंग का पोमचा पीहर पक्ष या ननिहाल पक्ष से लाया जाता है।

– विधवा महिलाओं द्वारा ओढ़ी जाने वाली काले रंग की ओढ़नी "चीड़ का पोमचा" कहलाती है। जिसका सर्वाधिक प्रचलन हाड़ौती में है।
– आदिवासियों का पोमचा सवाई माधोपुर में बनता है जो काले रंग का होता है।

* लहरिया → जयपुर

- श्रावण में ओढ़ी जाने वाली ओढ़नी जिसमे लहरे (धारियाँ) बनी हो 'लहरिया' कहलाता है।

- श्रावण में भाई अपनी बहन को व पति अपनी पत्नी को उपहार स्वरूप लहरिये भेंट करते है। यह 5 से 7 रंगो तक रंगे जाते है लेकिन 5 रंग का लहरियाँ "शुभ" माना जाता है।

- लहरिये को रंगने वाला 'रँगरेज' (कुसुम के फूलो से) या 'निलगर' (नील से) कहलाता है।

- 'निलगर' कला अलवर। भरतपुर व 'रंगरेज' कला मारवाड़ की प्रसिद्ध है।
- प्रसिद्ध लहरियाँ - जयपुर का

* मोठड़ा → 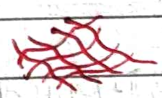 जोधपुर

- यदि लहरिये की धारियाँ एक-दूसरे को काटती हुई हो तो वह "मोठड़ा" कहलाता है।

* पगड़ी :→

प्रसिद्ध - (जोधपुर)
- पगड़ी शब्द का प्रयोग 'मेवाड़' में हुआ है।
- पगड़ी बांधने वाला 'छाबदार' कहलाता है।
* प्रसिद्ध छाबदार - सुरबख्श छाबदार

पगड़ी के लिए पाग, पेंचा, फेंटा, साफा आदि शब्द का प्रयोग किया जाता है।
- पगड़ी को 'आन-बान-शान' का प्रतीक माना जाता है।

- अटपटी, अमरशाही, उदयशाही, शिवशाही, बिजयशाही स्वरूपशाही हमीरशाही, डूंगरशाही, जहांगीरी आदि पगड़ियो के विभिन्न प्रकार है।

- पगड़ी को सजाने के लिए तुर्रा, कलंगी, धुगधुगी, सिरपेच,

महाराणा प्रताप का ब्यो. चक्रपाणिनी – की रचना विरत वल्लभ
दरबारी

फतेहपेन्च, बालाबदि, पट्टेतड़ी, लटकन आदि का प्रयोग किया जाता है।

- विभिन्न उत्सवों पर, विभिन्न त्यौहारो पर, विभिन्न स्थानो पर, विभिन्न जातियों द्वारा विभिन्न प्रकार की पगड़ियां पहनी जाती है जैसे :→

सुनार – आंटेदार पगड़ी
बणजारे – मोटी – पट्टीदार पगड़ी
राजपूत – केसरिया पगड़ी
विवाह – मोठड़े की पगड़ी
श्रावण / रक्षाबंधन पर – लहरिये की पगड़ी
होली पर – फूल पत्ती वाली पगड़ी
दशहरे पर – मांदिल की पगड़ी
दीपावली, शुभअवसरो पर – बंसती / पंचरंगी पगड़ी

जयपुर में – खूंटेदार पगड़ी
मारवाड़ में – छज्जेदार पगड़ी
* जोधपुर में – डूंगरशाही पगड़ी
बनेड़ा (भीलवाड़ा) मे – हमीरशाही पगड़ी

* उस्ताकला :→ बीकानेर
जनक – हिसामुद्दीन उस्ता

- उन्हें इस कला के लिए 1967 में 'राष्ट्रीय पुरस्कार' व 1986 'पदमश्री' पुरस्कार दिया गया।

- मरे हुये ऊँट की खाल पर सोने एंव चाँदी के तारे से किया गया सूक्ष्म एंव बारीक चित्रांकन "उस्तां" कला कहलाता है।

- इस कला के अधिकांश चित्रकार मुसलमान है जो चित्रों के नीचे अपना नाम व तिथि लिख दिया करते थे। ऐसे कलाकारों को 'उस्तां' कहा गया। इन कलाकारो को 'अनूपसिंह' 'लाहौर' से लाये थे।

मुख्य कलाकार →

हिसामुद्दीन उस्तां, अली रजा हसन, रामलाल, शाहमुम्मद रहीम खां, नाथु, मुराद, कायम, लूफा।

* मुनवती कला → बीकानेर

- ऊँट की खाल से पात्र 'कुप्पा या कुपी' कहलाता है। जो 'घी' या 'तेल' भरने के काम आता है। इन कुप्पों पर सोने या चाँदी के तारो का चित्रांकन 'मुनवत्ती' कला कहलाता है।

* थेवा कला → प्रतापगढ़

2015 - महेश राज सोनी - पद्मश्री पुरस्कार

- आभूषणों पर हरे रंग के बेल्जियम कांच से चित्रांकन करना 'थेवा कला' कहलाता है।
- मुख्य कलाकार - नाथु जी सोनी

* 2004 में थेवा कला को लिम्का बुक ऑफ वर्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया।

- वर्ष 2002 में भारत सरकार के डाक विभाग ने इस पर 5 ₹ मूल्य का डाक टिकट जारी किया।

जस्टिस बी (अंग्रेजी अधिकारी) अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाया।

* टेराकोटा → मोलेला राजसमंद मोहनलाल कुमावत - पद्मश्री

- पक्की मिट्टी या सिरेमिक मिट्टी से विभिन्न प्रकार के बर्तन/खिलौने बनाना "टेराकोटा" कहलाता है।
- इस कला में चिकोटी पद्धति* का प्रयोग किया जाता है।

मोहनलाल कुमावत - पद्म श्री पुरस्कार

* कागजी टेराकोटा (दोने-पत्तल) → अलवर

* सुनहरी टेराकोटा → बीकानेर

- इसमें बालूमिट्टी / सिलिका सेण्ड प्रयुक्त होती है।

टेराकोटा → हरजी गांव (मालौर जालौर) - मामा जी के घोड़े
बड़ापोल हनुमानगढ़ - प्राचीनतम टेराकोटा (वर्तमान नहीं)
बू गांव नागौर - मिट्टी के खिलौने व गुलदस्ते

कला	केन्द्र	विशेष
1. चटापटी का काम	बीकानेर	एक कपड़े को काटकर दूसरे पर सिलना जैसे → रथ, झूले, टेंट हाउस के परदे।
2. लकड़ी के नक्काशीदार फर्नीचर	बीकानेर/बाड़मेर	
3. लकड़ी के खिलौने	उदयपुर	
4. ★ मिट्टी के खिलौने व गुलदस्ते	बु गाँव नागौर	
5. पापड़ भुजिया	बीकानेर	
6. रसगुल्ला	बीकानेर	
7. पातरे-तिपरणे	जोधपुर	साधु-संन्यासियों के कमंडल
8. बादला	जोधपुर	सीसे या जस्ते का बर्तन जो पानी को ठंडा रखने के काम आता है।
9. पायल	जोधपुर, जयपुर	
10. मुकेश का काम	शेखावाटी	(बादला) अभ्रक, माइका का काम की कपड़े पर छोटी-छोटी बिंदिया बनाना
11. पेचवर्क/थेकड़ा लगाना	शेखावाटी	रंगीन कपड़ों को काटकर परस्पर सिलना
12. गलीचे-कार्पेट	जयपुर	मोटे कपड़े से बनाई गई आकर्षक बिछावन
13. नमदे-गलीचे	मालपुरा (टोंक)	ऊन से बनाई गई आकर्षक बिछावन।
14. दरिया टांकला	टांकला (नागौर)	सूती कपड़े से बनाई गई आकर्षक बिछावन
*15. बियना-फारसी गलीचे	बीकानेर जेल के कैदियों द्वारा	बीकानेर जेल कौमफल में एशिया की सबसे बड़ी जेल है।

राज. में नरेगा की शुरुआत - उदयपुर की आकोला से

राज. का स्कॉटलैण्ड - अलवर (सर्वाधिक मादक पदार्थ)

जलेबी	जोधपुर	
39. गोंद	चौहटन (बाड़मेर)	
40. मेहंदी	सोजत पाली	
41. गहरी लाल सुर्ख मेंहदी	गिलुंड राजसमंद	
42. खस इत्र	भरतपुर, सवाई-माधोपुर	खस एक सुगंधित घास है।
43. ब्लैक पॉटरी	कोटा, सवाई माधोपुर	
44. स्ट्राबोर्ड	कोटा	
45. हस्त निर्मित कागज	सांगानेर (जयपुर) घोसुण्डा (चित्तौड़)	
* 46. संगमरमर की मूर्तियां	जयपुर	अर्जुन लाल प्रजापत को पदमश्री पुरस्कार
* 47. लाल पत्थर की मूर्तियां	थानागाजी अलवर	
* 48. काले पत्थर की मूर्तियां	तलवाड़ा बांसवाड़ा	
49. हेरिटेज शराब	महनसर झुंझुनू	
50. अंग्रेजी शराब	अलवर	
51. बीयर शराब	अलवर	
52. मावड़ी शराब	उदयपुर	(महुवे से बनी कच्ची शराब) → मुनाबाव
53. सर्वाधिक शराब	~~जयपुर~~ गंगानगर अलवर	स्टेशन बाड़मेर शुल्क मुक्त शराब की दुकाने है। काछबली गांव (राजसमंद) राज्य का शराब मुक्त (नशामुक्त) प्रथम गांव है।
5		

कला	केन्द्र	विशेष
कट्था	उदयपुर की सलूंबर व कोटड़ा तहसील	
54. तारकशी	नाथद्वारा (राजसमंद)	चांदी के तारों को परस्पर मिलाकर आभूषण बनाना।
55. चांदी के जेवर व कलात्मक वस्तुएं	उदयपुर	~~अ~~ मीनदानी, सुपारदानी, कटोरदानी इसके विभिन्न प्रकार है।
56. स्वर्ण आभूषण	जयपुर	
57. रत्न आभूषण	जयपुर	~~जयपुर में हीरे~~ * जयपुर मे हिरे जवाहरात की अन्तर्राष्ट्रीय मंडी है।
58. कुंदन का काम	जयपुर	किमती पत्थर पर कुन्दन की जड़ाई करना
59. मीनाकारी	जयपुर	आभूषणों पर की किमती पत्थर मीने की जड़ाई करना। इस कला के लिए कुदरतसिंह को 'पद्मश्री' पुरस्कार दिया जा चुका है।
60. तहनिशा का काम	अलवर जयपुर	आयुध सामग्री पर सोने-चांदी के तारों की जड़ाई करना।
61. कोफ्तगीरी का काम	जयपुर	फौलाद पर सोने व चांदी के तारों की जड़ाई
62. मुरादाबादी का काम	जयपुर	पीतल की वस्तुओं (बर्तनों) पर विभिन्न प्रकार की खुदाई करना।
63. जरदोजी का काम	जयपुर	सोने के तारो पर चाँदी के तार चढ़ाकर विभिन्न प्रकार के आभूषण बनाना
64. पेपरमेशी/कुट्टी का काम	जयपुर	कागज की लुगदी बनाकर विभिन्न प्रकार की कलात्मक वस्तुएं बनाना।
65. कलात्मक खिलौने —नुमा तोपे	जयपुर	
खेसला	लेटा गांव जालौर	

मोजड़ियां - भीनमाल (जालौर)

कला	केन्द्र	विशेष
66. *पन्नीगरी का काम	जयपुर	सोने-चांदी का वर्क बनाना (मिठाई पर लगाने वाला)
67. कशीदायुक्त मोजड़ियां	जयपुर	इसके लिए जयपुर "एक लेदर कॉम्पलेक्स" की स्थापना की गई है।
68. चमड़े की जूतियां	जोधपुर	
69. नोटों की स्याही	भीवाड़ी (जयपुर)	
70. मिररवर्क / कांच का काम	जैसलमेर	
71. कृषि उपकरण	गजसिंहपुर गंगानगर	
72. हैण्डटूल्स / हाथ के उपकरण	नागौर	
* रामदेव के घोड़े	जैसलमेर	
* मामा जी के घोड़े	आहोर जालौर का हरजी गांव	
* हाथीदांत का काम	जयपुर	
लाख का काम	जयपुर	
* मेण छपाई	सवाईमाधोपुर	मोम की छपाई
* बातिका	खंडेला (सीकर)	कपड़े पर मोम से छपाई करना
* मोण	मेड़ता (नागौर)	मिट्टी से बने बड़े-बड़े मटके (जिनका मुंह सकरा होता है)
* मोठड़े	बीकानेर	लाख से बने बर्तन

* मूर्ति कला - विभिन्न प्रकार के मूर्ति चित्र बनाना मूर्तिकला कहलाता है।

1. संगमरमर की मूर्तियां - जयपुर - अर्जुनलाल प्रजापत - पद्म श्री पुरस्कार
2. लाल पत्थर - थानागाजी (अलवर) (3) काले पत्थर की मूर्तियां - तलवाड़ा (बांसवाड़ा)
4. जस्ते की मूर्तियां - जोधपुर